भगवद् गीता

-डॉ उमेश प्रताप वत्स

मैं भगवद् गीता चिर् काल से
ये श्लोक सुनाना चाहती हूँ
हो तनावमुक्त जीना कैसे?
जीवन सार बताना चाहती हूँ

काया से परे ज्ञानेन्द्रियाँ है
ज्ञानेन्द्रियों से परे है मन चंचल
मन से परे है मति हमारी
मति से बढ़कर आत्मांचल
मैं आत्म शुद्धि की बात करूँ
सत्य से मिलाना चाहती हूँ
निस्वार्थ कर्म तुम करते जाओ
यह संदेश सुनाना चाहती हूँ

फल की इच्छा के बिना ही
जब तुम कर्तव्य निभाते जाओगे
तनाव नहीं होगा जीवन में
फिर खुशी से बढ़ते जाओगे

मैं प्रतिदिन पूजा अर्चन में
ये श्लोक पढ़ाना चाहती हूँ
यह नश्वर है सब मोह-माया
मैं सत्य दिखाना चाहती हूँ
आत्मा अजर अमर ठहरी
न गल सकती न जलती है

मरता तो मात्र मनुज शरीर
बीते भोर तो सांय ढलती है
धर्म-जाति से ऊपर उठकर
जीने की राह दिखाती हूँ

मानव मात्र का भला हो जिसमें
वह गीत दोहराना चाहती हूँ